साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 3, अंक 45, सितम्बर(द्वितीय) , 2018

औरत

जयश्री रॉय

एक इंसान का जन्म हुआ – विधाता की दी हुई सारी खूबियों के साथ! उसके चेहरे पर बुद्धिमता का तेज़ था, हृदय में करुणा की अगाध, अपार राशि और प्रेम की सनातन निधि थी।

सारे समाज ने उसको उलट-पलट कर देखा और फिर एक-दूसरे को। उनकी चावनी अर्थपूर्ण थी। अब सबके सर निषेध में लगभग एक साथ हिले – नहीं, यह उनके काम की नहीं! यह कोमल-सी खूबसूरत शै सबके लिए खतरनाक है! निहायत खतरनाक- सत्ता, समाज, भगवान्... आकाश, धरती पर जाने किसका-किसका सिंहासन डोलने लगा- इसे इसके मौलिक स्वरूप में पनपने नहीं दिया जा सकता। कतई नहीं!

एक आदिम षडयंत्र ने रावण की तरह अपने दस सर निकाले और शनै: शनै: भीषण स्वरूप में प्रकट हो अट्टहास कर उठा।

उस मेधा, स्वप्न और सुंदरता से भरी इंसान को सबके बीच लिटाया गया। फिर एक कबीलाई समाज ने सभ्यता का सुनहरा मुखौटा उतार अपने यत्न से छिपाए नाखून, दाँत तेज़ किए और फिर शुरू हो गई विधाता की अनुपम कृति की चीर-फाड़– सनातन चीर-फाड़...!

इस प्रक्रिया को कहीं सुन्नत कहते हैं तो कहीं शिक्षा, संस्कार, अनुकूलन... इसमें कभी देह पर चाकू चलती है तो कभी दिमाग पर! होता वही है जो हर कसाई बाड़े में होता है- काट-कूट कर निरीह मेमनों को समाज के तलहीन पेट की माप का बनाया जाता है, उसकी आत्मा को घोंट उसे टिक्का-बोटी का स्वादिष्ट स्वरूप दिया जाता है। सबके अनुकूल बनाया जाता है...।

दूसरी तरफ इस बीच धार दे कर पंगत में बैठे जीमने वालों की लपलपाती जीभ को चाकू की तेज फाल में तब्दील कर दिया जाता है, शान पर चढ़ कर वह कटार-सी चमक उठती है। नर्म त्वचा में उतर जाने को उद्धत!

शल्य क्रिया में सर्वप्रथम इस जीव की प्रखर बुद्धि पर हमला किया गया – यही है, यही है हर मुसीबत की जड़... यह रही तो उत्पात मचाती रहेगी, शांति भंग करेगी, व्यवस्था को चुनौती देगी! उन्माद भरी भीड़ ने उसे पीट-पीटकर लगभग भोंथरा बना दिया गया।

फिर आई आत्मविश्वास की बारी। उसके गगनचुंबी मीनार को घटाकर बौना कर दिया गया। ठिंगनी कद ज़मीन से लग कर चलेगी, आकाश को चुनौती नहीं देगी।

अब सबने एक हिंस्र इच्छा से भरकर उसके अंदर पनप रहे स्वप्न और अभिलाषा के छतनार बृक्ष को सहलाया और देखते ही देखते उसे निर्ममता से कांट-छांटकर एक सीमित कलेवर की बोन्साई में तब्दील कर दिया गया।

इसके बाद सबने बड़ी बारीकी से उसका मुआयना करना शुरू किया - कहीं कुछ खत्म करने से छूट तो नहीं गया। शत्रु को कुश की तरह जड़ से उखाड़ देना चाहिए। बीज रहा तो कभी ना कभी पनपना चाहेगा।

अरे, ये देखो– एक ने उसके कंधे पर अंखुआते दो नन्हें पंखों कों दिखाया– ओह! पंख! अभिलाषा के पंख! काट दो! हाँ! हाँ! काट दो... उड़ने की कोई संभावना बचने न पाये। सभी एक स्वर में चिल्लाये और दूसरे ही पल दो उजले पंख कतर कर हमेशा के लिए ठूंठ बना दिये गए। देह ही उसका पिंजरा बन गई। अब आकाश को कोई खतरा नहीं!

इसके बाद सबने अपनी पूरी ताकत लगाकर उसकी सतर काया और कंधे को झुकाया, उसकी दृष्टि में याचना, दीनता, लज्जा घोली, मन में भय, शंका, ग्लानि के बीज बोये और आत्मसम्मान को कुचलकर चेतना पर धर्म, संस्कार और मर्यादा का मुलम्मा चढ़ाकर उसे एकदम से कुंद और अपाहिज बना दिया।

उसे अंदर से पूरी तरह से खत्म कर देने का प्रयत्न किया गया, मगर उसकी देह के मांसल पौधे को पनपने के लिए छोड दिया गया। ये खूब फूले-फले। इसका नमकीन स्वाद और सोंधी गंध सबको भाता है। सबको इसकी सनातन चाह है, इसकी आदिम भूख और लालच में एक पूरी दुनिया रात दिन कुलबुला रही है। वह सबके लिए एक भोग की वस्तु है – केवल भोग्या है। एक महाभोज हर युग में, हर समाज में उसकी देह को घेरकर लगा हुआ है। हर नाम में, हर रूप में, हर संबंध में वह सिर्फ भोगी जाती रही है और जाती रहेगी, और कुछ नहीं...

एक लंबे ऑपरेशन और प्रशिक्षण के बाद वह इंसान रोबोट में तब्दील कर संसार के बाज़ार में उतार दी गई– और लीजिये, जो औरत कभी पैदा नहीं होती, वह अंतत: बना ही दी गई – ए परफेक्ट वुमन! मेड इन वर्ल्ड! पूरी दुनिया अपनी एक और सफलता पर नाच-गाकर जश्न मनाने लगी।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें